शीतयुद्ध

Dr.Pawan Kumar yadav

* Introduction :-

द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी और इटली के विरुद्ध कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने वाले राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ युद्ध की समाप्ति के पश्चात् से आपस में एक-दूसरे से दूर होते चले गये। इसका कारण यह था कि अमरीका द्वारा जापान पर गिराये गये दो एटम बमों से सोवियत संघ को साम्राज्यवाद का खतरा दिखायी देने लगा। इससे सोवियत संघ साम्यवादी विचारधारा में कड़ाई बरतने लगा। इसके परिणामस्वरूप दोनों शक्तियों में श्रेष्ठता के लिए प्रतिद्वन्दिता आरंभ हुई। फलतः दोनों देश विश्व की दो महाशक्तियों के रूप में उभरें। विश्व के अधिकतर देश इन दोनों देशों के नेतृत्व में इनके खेमे में एकत्रित होने लगे। अमरीका और रूस की विचारधारा को उनके अनुयायियों ने अपनी सहमति व्यक्त की। अमरीका और रूस इनके नेता के रूप में उभरे। अब इन नेताओं के बीच विचारों का संघर्ष प्रारंभ हुआ और शक्ति प्राप्ति के लिए होड़ भी। इसके

- Definition :-

(1) डॉ. एम. एस. राजन के अनुसार, "शीत युद्ध शक्ति संघर्ष की राजनीति का मिलाजुला परिणाम है, दो विरोधी विचारधाराओं के संघर्ष का परिणाम है, दो प्रकार को परस्पर विरोधी जीवन पद्धतियों का परिणाम है, विरोधी चिन्तन पद्धतियों और संघर्षपूर्ण राष्ट्रीय हितों की अभिव्यक्ति है जिनका अनुपात समय और परिस्थिति के अनुसार एक-दूसरे के पूरक के रूप में बदलता रहा है।"

(2) जोसेफ फ्रेंकेल (Joseph Frankel) के शब्दों में "शीत युद्ध को दो बड़े राज्यों के बीच विद्यमान गहरी प्रतियोगिता अर्थात् चालों तथा प्रतिचालों का सिलसिला माना जा सकता है।"

(3.) पं. जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, "शीत युद्ध पुरातन शक्ति सन्तुलन की अवधारणा का नया रूप है। यह दो विचारधाराओं का संघर्ष न होकर दो महाशक्तियों का आपसी संघर्ष है।"

(4.) डी. एफ. फ्लेमिंग के शब्दों में, "शीत युद्ध एक ऐसा युद्ध है जो युद्ध

ग्रोमिको की मुलाकात एक शुभ संकेत सिद्ध हुई जिसने गोर्बाच्येव रीगन शिखर बैठक (नवंबर, 1985) का आधार तैयार कर दिया। यह पहली शिखर वार्ता औपचारिक शुरुआत जैसी रही और दोनो नेताओं की इस बातचीत के लिए विचारणीय विषयों की कोई सूची नहीं थी। लेकिन इस शिखर वार्त्ता का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में है कि पाँच-छः वर्ष के दूसरे शीत-युद्ध और जबर्दस्त तनाव तथा चुप्पी के बाद तनाव घटाने की दिशा में यह पहला बड़ा कदम था। इसके बाद एक के बाद एक शिखर वार्त्ता और समझौते होते गये और 1991 के अंत तक शीत युद्ध समाप्त हो गया। शीत युद्ध समाप्ति की दिशा में निम्नलिखि समझौते, शिखर वार्ताएँ और घटनाक्रम उल्लेखनीय है —

शीत युद्ध के बाद 'दूसरा शीत-युद्ध' अपने चरम पर था और फिर एकदम 7 वर्षों (1985-91) मे 'दूसरे शीत-युद्ध' का चरम नरम होकर नीचे कैसे आ गया शीत-युद्ध की समाप्ति कैसे और क्यों हुई? इसके निम्नलिखित कारण है :—

क्षेत्र में नहीं, बल्कि मनुष्य के मस्तिष्क में लड़ा जाता है तथा इसके द्वारा उसके विचारों पर नियंत्रण स्थापित किया जाता है।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शीत युद्ध वास्तविक युद्ध न होकर युद्ध का वातावरण होता है। शीतयुद्ध ~~का~~ का रणक्षेत्र युद्ध का मैदान न होकर मनुष्य का मस्तिष्क होता है। यह हथियारों से न लड़ा जाकर प्रतियोगिता, घृणा और दूसरे को नीचा दिखाने आदि साधनों से लड़ा जाता है।

शीत युद्ध के अंत - प्रमुख समझौते एवं घटनाएँ :-

1985 - 91 की कालावधि शीतयुद्ध के अंत की दृष्टि से सोवियत संघ - अमरीकी संबंधो में ऐतिहासिक सीमाचिन्ह मानी जाती है। दूसरे शीत-युद्ध काल में दोनों ही देश हथियारों के अनुसंधान और उत्पादन में लगे रहे पर यह भी महसूस करते रहे कि परमाणु शस्त्रों के बारे में कोई न कोई समझौता हो जाना चाहिए जिससे दोनो ही अपने रक्षा उत्पादन और अनुसंधान बजट में हो रही बेतहाशा वृद्धि को रोक सके। इस उद्देश्य के लिए जनवरी, 1985 में अमरीकी विदेश मंत्री जार्ज शुल्टज और सोवियत ~~विदे~~ विदेश मंत्री आन्द्रेई

(1) मिखाइल गोर्बाचौफ का व्यक्तित्व एवं नीतियाँ :—

मार्च, 1985 में सोवियत संघ की सत्ता मिखाइल गोर्बाचौफ के हाथों में आयी। जिस प्रकार रूसी नेता स्टालिन को शीतयुद्ध के जनक के रूप मे याद किया जाता है उसी प्रकार दुनिया गोर्बाचौफ को शीत युद्ध का अन्त करने वाले नेता के रूप में याद करेगी। उनकी 'ग्लास्नोस्त' और 'पेरेस्त्रोइका' नीतियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रो में नयी व्यवस्था का सूत्रपात किया। सोवियत संघ ने गोर्बाचौफ के नेतृत्व मे जिस उदार सौम्य और समझौतावादी राजनय का आश्रय लिया उसने विश्व राजनीति मे आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया।

(2) सोवियत संघ की आर्थिक मजबूरियाँ →

1980 के बाद सोवियत संघ आर्थिक संकट से गुजर रहा था। अंतरिक्ष अनुसंधान की प्रतिस्पर्धाओ और शस्त्र निर्माण पर बेतहाशा खर्च करने के बाद उसकी अर्थव्यवस्था लड़खड़ाने लगी। अब उसमें सामर्थ्य नही थी कि वह पश्चिमी देशों से शीत-युद्ध की प्रतिस्पर्द्धा कर सके।

मिखाइल गोर्बाचौफ ने दो टूक शब्दों मे सोवियत अर्थव्यवस्था की दुर्दशा

का वर्णन किया है। उनके अनुसार, स्थिति का विश्लेषण करने पर हमें यह पता चला कि आर्थिक प्रगति मंद होती जा रही है। तथा इसका स्तर गिरने लगा।

(3) सोवियत संघ का अवसान → 1990-91 के वर्ष सोवियत संघ के लिए उथल-पुथल के रहे हैं। 19 अगस्त, 1991 की तख्ता पलट घटना से गोर्वाचौफ की लोकप्रियता को गहरा आघात लगा। विश्व शक्ति के रूप में अब सोवियत संघ की प्रतिष्ठा गुजरे जमाने की चीज होकर रह गयी। सोवियत संघ की स्थिति में आयी यह गिरावट खाड़ी संकट के दौरान उसके द्वारा अमरीका को दिये गये निष्क्रिय समर्थन से ही स्पष्ट हो चुकी थी, लेकिन इसकी चरम परिणति तब हुई जब गोर्बाचौफ ग्रुप-7 की लंदन बैठक में जाकर पश्चिमी आर्थिक मदद जुटाने में विफल रहे और उनके अपने देश में अनेक गणराज्यों ने जोर-शोर से अपनी स्वायत्तता की माँग रखनी शुरू कर दी। इससे जुड़ी कुछ अन्य घटनाएँ भी हैं जिन्होंने शीत युद्ध के समाप्त होने में कारागार रहे हैं तथा इनका परिणाम है कि आज सोवियत संघ मात्र एक कंकाल सा खड़ा रह गया है जिसकी एक-एक बात कल तक अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सिंहनाद की हैसियत रखती थी।

(५) कम्युनिस्ट देशों में लोकतंत्र और बाजार अर्थव्यवस्था :—

शीत युद्ध एक वैचारिक संघर्ष था। सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के देशों ने विकास का 'कम्युनिस्ट मॉडल' अपनाया था जिसकी विशेषता थी- एक सर्वाधिकारवादी दल तथा केन्द्रकृत आदेशित अर्थव्यवस्था। किंतु 1989-90 के वर्षों पूर्वी यूरोप के देशों में स्वतंत्र निर्वाचन बहुदलीय लोकतंत्रीय राजनीतिक व्यवस्था के साथ-साथ बाजार अर्थव्यवस्था अपना ली गयी। 1990 में सोवियत संघ में भी साम्यवादी पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया तथा मुक्त बाजार व्यवस्था स्वीकार कर ली गयी। अब पश्चिमी देशों और पूर्वी यूरोप के देशों में कोई अन्तर नहीं रह गया। अब तो सोवियत संघ को जी (ग्रुप)-7 देशों से आर्थिक सहायता मिलने की संभावना बढ़ गयी। ऐसे परिवर्तन के दौर में शीतयुद्ध का अन्त एक स्वाभाविक घटना थी।